HARYANA STATE S.A.S. EXAMINATION PART-I

PRECIS AND DRAFTING (English & Hindi) Nov 1997

(Without the aid of books)

Time allowed: 3 Hours Max.Marks:100

Q. 1 Please prepare a draft letter from the Chief Secretary to all the Deputy Commissioners in the State directing them to take precautionary measures for maintenance of law and order during farmers agitation. **(20 Marks)**

Q. 2 **(a)** Frame sentences using the following:-

i. By leaps and bounds
ii. With open arms
iii. For good
iv. A red-letter day
v. All and Sundry **(5 marks)**

Hem Sharma Classes: 9991500264

(b) Change into passive voice:

i. When do you eat your breakfast?
ii. What was Veena doing?
iii. Sit down. **(3 marks)**

(c) Change into indirect speech:

i. Mamta said to her teacher, "Please grant me leave for today only."
ii. He said to me, "I can't help you in this matter." **(2 marks)**

Q. 3 Translate any twenty into Hindi:

1. Working results
2. Whole sale price
3. Various provident funds
4. Supplementary grants
5. Top priority
6. Token demand
7. Schedule of New Expenditure
8. Ratification
9. Registration fee
10. Particulars
11. Pensions and other retirement benefits
12. Presidential ordinance

13. Performance evaluation
14. Acceptable proposal
15. Administrative and Technical approval
16. Relevant details
17. Appraisal
18. Superannuation pension
19. Beneficiary
20. Comptroller and Auditor General
21. Calender year
22. Discretionary quota
23. Ex-gratia payment

(20 marks)

Q. 4 आयुक्त स्वास्थ्य विभाग हरियाणा की ओर से अर्ध सरकारी पत्र सभी जिलों के उपायुक्तों के नाम लिखने का प्रारूप बनाएं जिसमें डेंगू बुखार पर नियन्त्रण करने हेतु सुझाव दिये गये हों। **(20 अंक)**

Hem Sharma Classes: 9991500264

Q. 5 निम्नलिखित परिच्छेद का सारांश बनाइए जो कि मूल का एक तिहाई भाग हो और उसे उपयुक्त शीर्षक भी दीजिए।

वर्तमान समय में भारत जैसे विशाल देश के लिए एकता का अर्थ है राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक एकता अर्थात उनके ध्येय की विभिन्नताओं के रहते हुए भी भावात्मक एकता की एक डोर। हमारा इतिहास बताता है कि इस देश में समय-समय पर विघटनकारी शक्तियां पनपती रही हैं। इन शक्तियों ने कभी धर्म, कभी जाति, कभी भाषा तथा कभी प्रान्त के नाम पर पारस्परिक वैरभाव को उभारने का प्रयत्न करके इस एकता को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया, पर वे अपने प्रयास में सफल नहीं हो पाए। वर्तमान समय में भी ये प्रवृतियां अपना फन फैलाने को उत्सुक रुख रही हैं।

हमारा सौभाग्य है कि समय समय पर हमारे देश में ऐसे संत महर्षि, त्यागी–तपस्वी एवं विद्वान पैदा होते रहे हैं जिन्होंने विघटन और अलगाव की प्रवृति को पहचाना और इसे मिटाने में अपनी पूरी शक्ति झोंक दी। उन्होंने एकता और सहिष्णुता की जो धारा बहाई, वह आज तक बहती चली आ रही है। कभी कभी उसका प्रवाह क्षीण प्रतीत होने लगता है, पर वह सूखती कभी नहीं। उसकी बदौलत यह देश टूटने से बचा रह सका है। यदि हम भावात्मक एकता के स्वरूप पर विचार करें तो हमें प्रतीत होता है कि भारत के लिए यह कोई नया नारा नहीं है। यह तो भारतीय

संस्कृति का सार तत्व है । भारतीय संस्कृति में सदैव सहिष्णुता, एकता, मानवता और परोपकार की भावना की प्रबलता रही है ।

रविन्द्र नाथ टैगुर ने कहा था धर्म को पकड़े रहो, धर्मों को छोड़ दो । उन्होंने भारत को महामानवों का सागर कहा । वे कहते हैं कि भारतीय संस्कृति किसी एक जाति की रचना नहीं है । उसकी रचना और विकास में अनेक जातियों का योगदान रहा है । भावात्मक एकता कहते ही हमारा आशय यह कदापि नहीं है कि हम यहां के भेदों को नकार रहे हैं । भारत में अनेक क्षेत्रों में विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है । कश्मीर के लोग ठंड में सिकुड़े हैं तो केरल और तमिलनाडु के निवासी गर्मी की मार को झेलते हैं । कहीं ऊँचे–ऊँचे पर्वत हैं तो कहीं गहरे सागर है । खान–पान, वेश–भूषा एवं भाषा के क्षेत्र में भी भिन्नताएं विद्यमान हैं । यहां अनेक धर्मों के अनुयायी हैं जो अपने अपने ढंग से पूजा उपासना की विधि का पालन करते हैं । इन सभी विभिन्नताओं के बावजूद सब भारतीयों एकता के सूत्र में बंधे हैं । **(30 अंक)**